

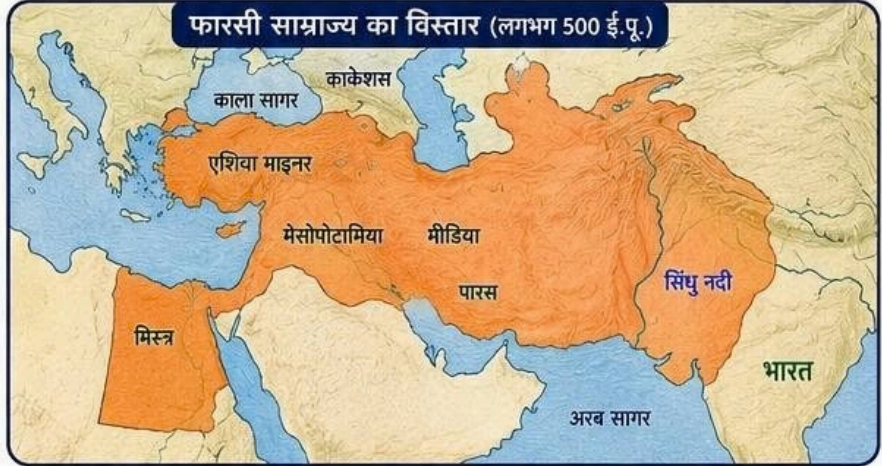


www.championsbooks.shop

परिचय : फारसी साम्राज्य प्राचीन संसार के सबसे विशाल साम्राज्यों में से एक था। इसकी स्थापना साइरस महान (Cyrus the Great) ने लगभग 550 ई.पू. में की। यह साम्राज्य पश्चिम में ग्रीस से लेकर पूर्व में सिंधु नदी तक और उत्तर में काकेशस से लेकर दक्षिण में मिस्र तक फैला हुआ था। फारसी साम्राज्य की संगठनात्मक व्यवस्था, सहिष्णु नीति और सड़कों तथा डाक व्यवस्था ने इसे शक्तिशाली बनाया।

मुख्य विशेषताएँ

- ★ फारस की स्थापना अचेमेनिड वंश द्वारा की गई।
- ★ साइरस महान ने लीडिया, बेबीलोन और अन्य राज्यों को विजित कर विशाल साम्राज्य स्थापित किया।
- ★ धर्म के क्षेत्र में सहिष्णुता – 'साइरस की नीतियाँ' प्रसिद्ध हैं।
- ★ सान्नापी प्रणाली द्वारा साम्राज्य को प्रांतों में बाँटकर शासन किया जाता था।
- ★ राजमार्ग (Royal Road) और डाक व्यवस्था विकसित की गई।
- ★ कर प्रणाली संगठित थी और मुद्रा (स्वर्ण 'डारिक' और रजत 'सिगलोस') का प्रचलन हुआ।
- ★ फारसी कला, वास्तुकला और प्रशासन अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध हैं।



उत्पत्ति और काल

संस्थापक	साइरस महान (Cyrus the Great)
वंश	अचेमेनिड वंश (Achaemenid Dynasty)
स्थापना	लगभग 550 ई.पू.
प्रमुख शासक	साइरस महान, कम्बुजिया, दारा प्रथम, क्षयर्श (Xerxes), दारा तृतीय
अंत	330 ई.पू. (सिकंदर द्वारा पराजय)

प्रमुख शासक

साइरस महान (559-530 ई.पू.)	दारा प्रथम (522-486 ई.पू.)	क्षयर्श प्रथम (486-465 ई.पू.)	दारा तृतीय (336-330 ई.पू.)
फारसी साम्राज्य के संस्थापक। उदार और न्यायप्रिय शासक।	साम्राज्य का विस्तार और संगठित प्रशासन।	यूनान पर आक्रमण (ग्रीस के साथ युद्ध) किए।	सिकंदर महान से पराजित होकर साम्राज्य का अंत हुआ।

प्रशासनिक व्यवस्था

- साम्राज्य को 'सान्नापी' (प्रांत) में विभाजित किया गया था।
- प्रत्येक प्रांत पर 'सान्नाप' नामक अधिकारी नियुक्त होता था।
- साम्राज्य में शाही सड़कों, डाक-चौकियों और जासूसी व्यवस्था का जाल था।
- राजा सर्वोच्च शासक था, परन्तु उसे योग्य अधिकारियों की सहायता मिलती थी।
- कर वसूली नियमित थी और राज्य की आय स्थिर रहती थी।



धर्म और संस्कृति

- फारस का प्रमुख धर्म 'जरथुस्ट्रियन धर्म' (Zoroastrianism) था।
- अहुरा मजदा को सर्वोच्च देवता माना जाता था।
- अच्छे विचार, अच्छे शब्द और अच्छे कर्म इस धर्म के सिद्धांत हैं।
- विभिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई गई।
- फारसी कला में स्तंभ, शिलालेख और महलों का विशेष महत्व है।



राजमार्ग और डाक व्यवस्था

- साम्राज्य में 'शाही मार्ग' (Royal Road) लगभग 2500 किमी. लंबा था, जो साईडिस (Lydia) से सूसा (Susa) तक जाता था।
- हर 20-25 किमी. पर डाक-चौकियाँ (Relay Stations) थीं।
- घुड़सवार दूत दिन-रात संदेश भेजते थे, जिससे प्रशासन तेज और प्रभावी बना।



मुद्रा और अर्थव्यवस्था

- स्वर्ण मुद्रा 'डारिक' और रजत मुद्रा 'सिगलोस' प्रचलित थीं।
- कर प्रणाली नियमित थी।
- व्यापार को बढ़ावा दिया गया और साम्राज्य में शांति बनी रही।
- कृषि, पशुपालन और शिल्प उद्योग विकसित हुए।



डारिक (स्वर्ण) सिगलोस (रजत)

कला और वास्तुकला

- पर्सेपोलिस (Persepolis) में भव्य महल और अपादाना भवन प्रसिद्ध हैं।
- उँचे स्तंभ, सुंदर नवकाशी और भित्तिचित्र फारसी कला की विशेषता हैं।
- उनकी कला पर मिस्र, बाबिलोन और यूनान का प्रभाव था।



फारसी सेना

- फारसी सेना संगठित और विविध जातियों से बनी थी।
- सेना में पैदल सेना, घुड़सवार सेना और रथ शामिल थे।
- राजा के 'अमर सैनिक' (Immortals) नामक विशेष दल बहुत प्रसिद्ध था।



फारसी साम्राज्य का पतन

- दारा तृतीय के समय सिकंदर महान (Alexander the Great) ने एशिया पर आक्रमण किया।
- गौगामेला के युद्ध (331 ई.पू.) में दारा तृतीय पराजित हुआ।
- 330 ई.पू. में फारसी साम्राज्य का अंत हो गया और यह सिकंदर के साम्राज्य में मिल गया।



नोट : फारसी साम्राज्य ने प्रशासन, सड़कों, डाक व्यवस्था, धर्म सहिष्णुता और मुद्रा प्रणाली के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसकी व्यवस्थाएँ बाद की शासन प्रणालियों के लिए प्रेरणा बनीं।

